Badal Saraswat
@badal_saraswat • Mar 1, 2021 • 33 tweets

Share Twitter Download

#काँग्रेस_के_कुकर्म
आप सभी एक बात की कल्पना कीजिए...लगभग 30वर्ष का पति जब जेल की सलाखों के भीतर खड़ा है और बाहर उसकी वह युवा पत्नी खड़ी है,जिसका बच्चा हाल ही में मृत हुआ है,
☝️ इस बात की पूरी #संभावना है कि अब शायद इस जन्म में इन पति-पत्नी की भेंट न हो, ऐसे कठिन समय पर

READ👇👇

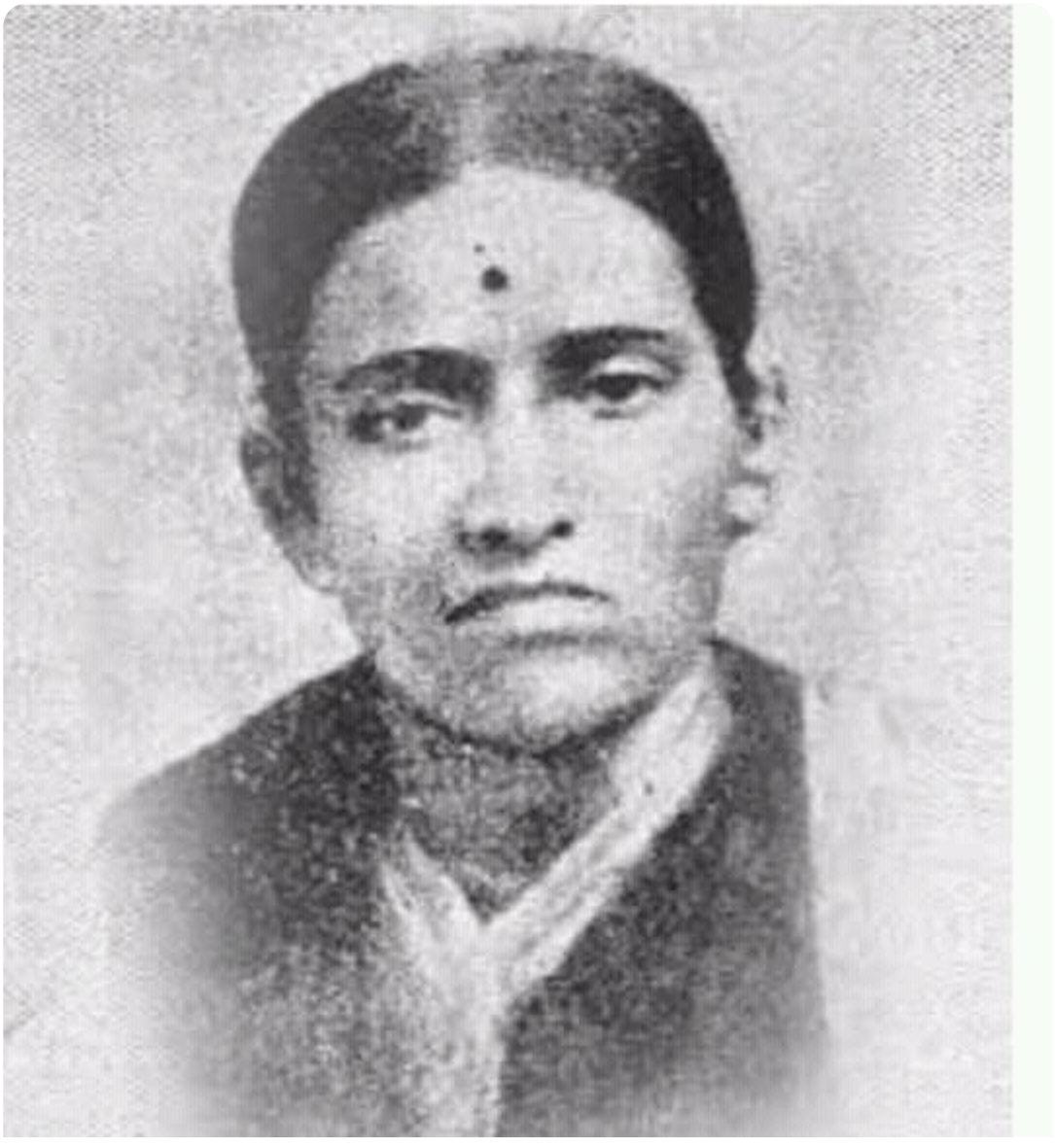

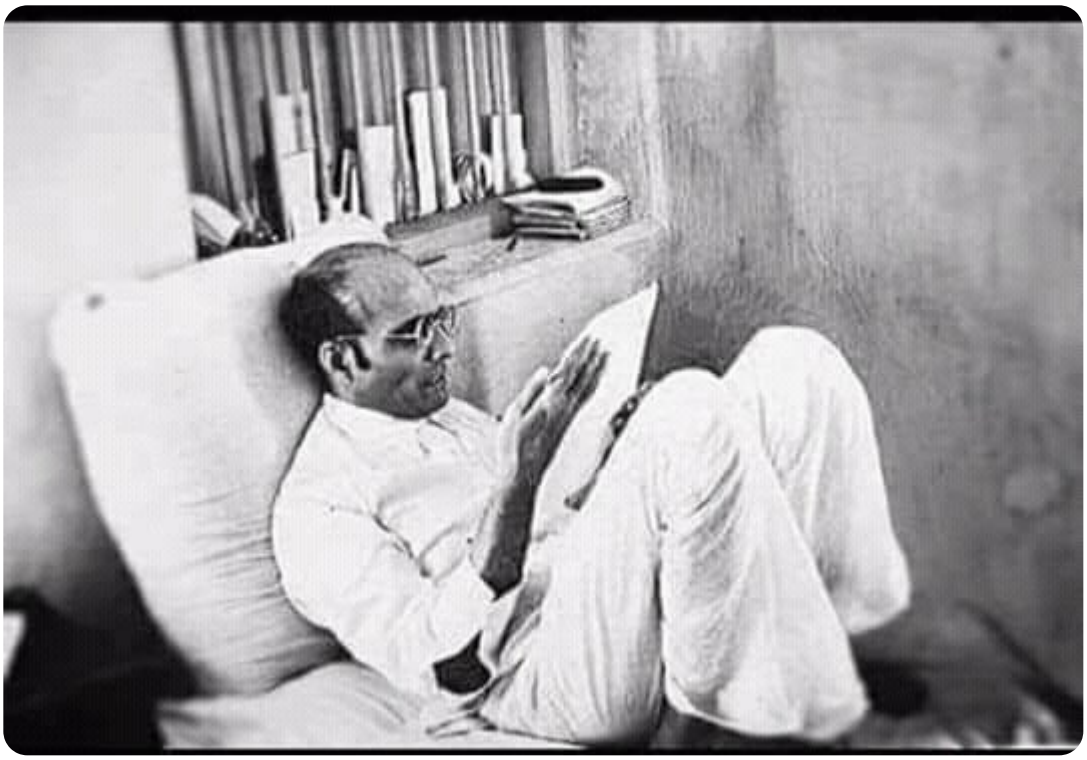

इन दोनों ने क्या बातचीत की होगी,कल्पना मात्र से आप सिहर उठेंगे शायद???

जी हाँ!!!मैं बात कर रहा हूँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे चमकते सितारे #विनायक_दामोदर_वीरसावरकरजी की...🙏🙏🙏

☝ यह परिस्थिति सावरकर के जीवन में आई थी,जब अंग्रेजों ने उन्हें #कालापानी(#AndamanCellularJail)

की कठोरतम सजा के लिए अंडमान जेल भेजने का निर्णय लिया और उनकी पत्नी उनसे मिलने जेल में आईं...

☝ उस वाकर अत्यधिक मजबूत ह्रदय वाले #वीर_सावरकरजी(Vinayak Damodar Savarkar)ने अपनी पत्नी से एक ही बात कही:–"तिनके-तीलियाँ बीनना और बटोरना तथा उससे एक घर बनाकर उसमें बाल-बच्चों का पालन-पोषण

करना,यदि इसी को परिवार और कर्तव्य कहते हैं तो ऐसा संसार तो कौए और चिड़िया भी बसाते हैं,अपने घर-परिवार-बच्चों के लिए तो सभी काम करते हैं,मैंने अपने #देश को अपना परिवार माना है,इसका #गर्व कीजिए...

☝ इस दुनिया में कुछ भी बोए बिना कुछ उगता नहीं है,धरती से ज्वार की फसल उगानी हो तो उस

के कुछ दानों को जमीन में गड़ना ही होता है,वह बीच जमीन में,खेत में जाकर मिलते हैं तभी अगली ज्वार की फसल आती है।
☝ यदि #हिन्दुस्तान में अच्छे घर निर्माण करना है,तो हमें अपना घर #कुर्बान😢करना चाहिए,
☝ कोई न कोई मकान ध्वस्त होकर मिट्टी में न मिलेगा,तब तक नए मकान का नवनिर्माण कैसे ❓

होगा"
☝ कल्पना करो कि हमने अपने ही हाथों अपने घर के चूल्हे फोड़ दिए हैं,अपने घर में आग लगा दी है,परन्तु आज का यही धुआँ कल भारत के प्रत्येक घर से स्वर्ण का धुआँ बनकर निकलेगा
☝ #यमुनाबाईजी:-बुरा न मानें,मैंने तुम्हें एक ही जन्म में इतना कष्ट दिया है कि"यही पति मुझे जन्म-जन्मांतर तक

मिले"
☝ ऐसा कैसे कह सकती हो,यदि अगला जन्म मिला,तो हमारी भेंट होगी अन्यथा यहीं से विदा लेता हूँ(उन दिनों यही माना जाता था,कि जिसे #कालापानी की भयंकर सजा मिली वह वहाँ से जीवित वापस नहीं आ पाएगा)

☝ अब सोचिये,इस भीषण परिस्थिति में मात्र 25-26 वर्ष की उन "युवा स्त्री"ने अपने पति यानी

#वीर_सावरकरजी से क्या कहा होगा???

☝ #यमुनाबाई:-(अर्थात भाऊराव चिपलूनकर की पुत्री)धीरे से नीचे बैठीं और जाली में से अपने हाथ अंदर करके उन्होंने #वीर_सावरकरजी के पैरों को #स्पर्श किया औए उनके चरणों की #धूल अपने #मस्तक पर लगाई
☝ सावरकरजी भी चौंक गए,अंदर से हिल गए और उन्होंने पूछा:-

ये क्या करती हो???
☝ अमरवीर क्रांतिकारी #वीर_सावरकरजी की पत्नी ने कहा:-"मैं यह चरण अपनी आँखों में बसा लेना चाहती हूँ,ताकि अगले जन्म में कहीं मुझसे चूक न हो जाए,अपने परिवार का पोषण और चिंता करने वाले मैंने बहुत देखे हैं...
☝ लेकिन समूचे भारतवर्ष को अपना परिवार मानने वाले व्यक्ति🙏

मेरे पति हैं,इसमें बुरा मानने वाली बात ही क्या है,यदि आप #सत्यवान हैं, तो मैं #सावित्री हूँ...
☝ मेरी तपस्या में इतना बल है कि"मैं यमराज से आपको वापस छीन लाऊँगी,आप चिंता न करें...अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें, हम इसी स्थान पर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं"🙏🙏🙏
सच में यही तपस्या है

अपने पति के प्रति जो #यमुनाबाईजी ने निभाई🙏🙏🙏
☝ सच में क्या जबरदस्त ताकत है,उस युवावस्था में पति को #कालापानी की सजा पर ले जाते समय,कितना ❓ #हिम्मत भरा वार्तालाप है

☝ सचमुच,#क्रान्ति_की_भावना कुछ स्वर्ग से तय होती है,कुछ संस्कारों से,यह हर किसी को नहीं मिलती

☝ वीर_सावरकरजी को

50 साल की सजा देकर भी अंग्रेज नहीं मिटा सके...और ना हीं मिटा पाए
☝ लेकिन #वामपंथियों😠व #काँग्रेस_के_चाटुकार_इतिहासकारों ने उन्हें मिटाने की भरपूर पूरी कोशिश जरूर की है😠😠😠
☝ #26फरवरी1966 को वह इस दुनिया से प्रस्थाान कर गए😢
हमारे अपने देश के लिए #शहीद होकर हमेशा-हमेशा के लिए

अमर हो गए🙏🙏🙏
☝ लेकिन इससे केवल 56 वर्ष व दो दिन पहले #24फरवरी1910 को उन्हें #ब्रिटिश_सरकार😠 ने एक नहीं,बल्कि दो-दो जन्मों के कारावास की सजा सुनाई थी।😠😠😠
उन्हें 50 वर्ष की सजा सुनाई गई थी।
☝ वीर सावरकरजी भारतीय इतिहास में प्रथम ऐसे क्रांतिकारी हैं, जिन पर #हेग स्थित

#अंतरराष्ट्रीय_न्या्यालय में मुकदमा चलाया गया था,उन्हें काले पानी की सजा मिली।
☝ #कागज व #लेखनी से वंचित कर दिए जाने पर उन्होंने अंडमान जेल की दीवारों को ही #कागज और अपने नाखूनों,कीलों व कांटों को अपना #पेन बना लिया था,जिसके कारण वह #सच्चाई दबने से बच गई,
☝ जिसे न केवल ब्रिटिश,

बल्कि आजादी*के बाद तथाकथित #इतिहासकारों ने भी #दबाने का भरपूर प्रयास किया😠😠😠

☝ पहले ब्रिटिश ने और बाद में #काँग्रेसी_चाटुकार_इतिहासकारों ने😠-#वामपंथी_इतिहासकारों😠ने हमारे इतिहास के साथ जो खिलवाड़ किया,😠😠😠उससे पूरे इतिहास में #वीर_सावरकरजी अकेले मुठभेड़ करते नजर आते हैं।

☝ हमारे भारत का दुर्भाग्य देखिए,हमारे भारत का युवा पीढ़ी यह तक नहीं जानता कि #वीर_सावरकरजी को आखिर दो जन्मों के कालापानी की सजा क्यों मिली थी???

☝ जबकि हमारे #इतिहास की पुस्तकों में तो आजादी की पूरी लड़ाई"गाँधी-नेहरू"😠के नाम कर दी गई है😠😠

☝ तो फिर आपने कभी सोचा कि जब देश को

आजाद कराने की पूरी लड़ाई "गाँधी-नेहरू"😠ने लड़ी*
☝ तो #विनायक_दामोदर_वीरसावरकरजी को कालेपानी की सजा क्यों दी गई???
☝ उन्होंने तो #भगतसिंहजी❤️,#चंद्रशेखर_आजादजी और उनके अन्य क्रांतिकारी साथियों की तरह बम-बंदूक से भी अंग्रेजों पर हमला नहीं किया था... तो फिर क्यों ❓ उन्हें 50 वर्ष की

सजा सुनाई गई थी।😢
☝ वीर सावरकरजी की गलती यह थी कि उन्होंने #कलम उठा लिया था और अंग्रेजों के उस झूठ का पर्दाफाश कर दिया,जिसे दबाए रखने में न केवल #अंग्रेजों का,बल्कि केवल गांधी-नेहरू को ही असली स्वतंत्रता सेनानी मानने वालों का भी भला हो रहा था।

☝ अंग्रेजों ने 1857 की क्रांति को

केवल एक #सैनिक_विद्रोह करार दिया था,जिसे आज तक वामपंथी इतिहासकार ढो रहे हैं।

☝ सन1857 की क्रांति की सच्चाई को दबाने और फिर कभी ऐसी क्रांति उत्पन्न न हो इसके लिए ही अंग्रेजों ने अपने एक अधिकारी #ए०ओ०ह्यूम से #सन1885 में #काँग्रेस😠की स्थांपना करवाई थी।
👉ये तो लगभग अब सभी को पता

चल चुका है👈
☝ सन1857 की क्रांति को कुचलने की जयंती उस वक्त ब्रिटेन में हर साल मनाई जाती थी और #क्रांतिकारी_नाना_साहब, #रानी_लक्ष्मीतबाई, #तात्या_टोपे आदि को हत्यारा व उपद्रवी बताया जाता था।😠😠😠

☝ 1857 की 50 वीं वर्षगांठ 1907 ईस्वी में भी "ब्रिटेन में विजय दिवस"के रूप मे मनाया

जा रहा था,जहा #वीर_सावरकरजी सन1906 म #वकालत_का_पढ़ाइ करन क लिए पहुच थ।

☝ #वीर_सावरकरजी को रानी लक्ष्मीबाईजी, नाना साहब, तात्या टोपे का #अपमान😠करता नाटक इतना चुभ गया कि"उन्होंने उस #क्रांति_की_सच्चाई तक पहुंचने के लिए...

☝ भारत संबंधी ब्रिटिश दस्तोवेजों के भंडार

"इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी" और "ब्रिटिश म्यूतजियम लाइब्रेरी" में प्रवेश पा लिया और लगातार डेढ़ वर्ष तक #ब्रिटिश_दस्तावेज व #लेखन की खाक छानते रहे।

☝ उन दस्तावेजों के खंगालने के बाद उन्हें पता चला कि सन1857 का विद्रोह एक "सैनिक विद्रोह"नहीं,बल्कि देश का पहला #स्वतंत्रता_संग्राम था,

इसे उन्होंने मराठी भाषा में लिखना शुरू किया।

☝ #10मई1908 को जब फिर से ब्रिटिश 1857 की क्रांति की वर्षगांठ पर लंदन में विजय दिवस मना रहे थे...
☝ तो वीर सावरकरजी ने वहां चार पन्नों का एक पेम्पलेट बंटवाया... ☝ जिसका शीर्षक था "ओ मार्टर्स" अर्थात "ऐ शहीदों"।
☝ अपने पेम्पलेट द्वारा

#वीर_सावरकरजी ने #सन1857 को मामूली सैनिक क्रांति बताने वाले अंग्रेजों के उस झूठ से पर्दा हटा दिया...
☝ जिसे लगातार 50 वर्षों से जारी रखा गया था,अंग्रेजों की कोशिश थी कि भारतीयों को कभी #सन1857 की पूरी सच्चाई का पता ना चले,अन्यशथा उनमें खुद के लिए #गर्व और अंग्रेजों के प्रति #घृणा

का भाव जग जाएगा...

☝ #सन1910 में सावरकरजी को लंदन में ही गिरफ्तार कर लिया गया,#वीर_सावरकरजी ने समुद्री सफर से बीच ही भागने की कोशिश की...

☝ लेकिन फ्रांस की सीमा में पकड़े गए,इसके कारण उन पर #हेग स्थित"अंतरराष्ट्रीय अदालत"में मुकदमा चला
☝ ब्रिटिश सरकार ने उन पर #राष्ट्रद्रोह
👇

का मुकदमा चलाया और कई झूठे आरोप उन पर लाद दिए गए...
☝ लेकिन सजा देते वक्त न्यायाधीश ने उनके पेम्पलेट "ए शहीदों"का जिक्र भी किया था,जिससे यह #साबित होता है कि अंग्रेजों ने उन्हें असली सजा उनकी सिर्फ #लेखनी के कारण ही दिया था,
#देशद्रोह के अन्य आरोप केवल मुकदमे को मजबूत करने के

लिए #वीर_सावरकरजी पर लादे😢गए थे।😠😠😠

☝ वीर सावरकरजी की पुस्तक "1857 का स्वायतंत्र समर"छपने से पहले की #सन1909 में प्रतिबंधित कर दी गई...
☝ पूरी दुनिया के #इतिहास में यह पहली बार था कि कोई पुस्तक छपने से पहले की बैन कर दी गई हो।
☝ पूरी ब्रिटिश #खुफिया_एजेंसी तक इसे भारत में

पहुंचने से रोकने में जुट गई,
☝ लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल रही थी,इसका पहला संस्करण #हॉलैंड में छपा था और वहां से #पेरिस होते हुए भारत पहुंचा था...
☝ इस पुस्तक से प्रतिबंध #सन1947 में हटा,
☝ लेकिन सन1909 में प्रतिबंधित होने से लेकर सन1947 में भारत की आजादी मिलने तक अधिकांश भाषाओं

में इस पुस्तक के इतने गुप्ते संस्करण निकले कि अंग्रेज थर्रा उठे थे।
☝ भारत, ब्रिटेन,अमेरिका, फ्रांस, जापान, जर्मनी, पूरा यूरोप अचानक से इस पुस्तक के गुप्त, संस्कंरण से जैसे पट गया।
☝ एक फ्रांसीसी पत्रकार #ई०पिरियोन ने लिखा था कि"यह एक महाकाव्यक है,दैवी मंत्रोच्चांर है,देशभक्ति

का दिशाबोध है।यह पुस्तक हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश देती है,क्योंकि महमूद-गजनवी के बाद सन1857 में ही हिंदुओं और मुसलमानों ने मिलकर समान शत्रु के विरुद्ध युद्ध लड़ा।
👉इसकी एक सच्चाई यह भी है कि जहाँ हिन्दू अपने आप को आजाद करने के लिए लड़ रहे थे तो वहीं दूसरी तरफ मुस्लिम पाकिस्तान

के लिए और अपनी सल्तनत,अपनी कायनात बचाने के लिए😠,गहराई से पता करने पर,पढ़ने पर सारे जाले साफ हो जाते हैं...भारत-पाकिस्तान विभाजन के बारे में आप जितना भी जानेगें,उतनी ही सच्चाई आपको पता चलती जाएगी👈

☝ यह सही अर्थों में राष्ट्रीय क्रांति थी।इसने सभी की नजरों में यह सिद्ध कर दिया

था कि यूरोप के महान राष्ट्रों के समान भारत भी #राष्ट्रीय_चेतना_प्रकट कर सकता है।"
☝️ आपको जानकर आश्चर्य होगा कि इस पुस्तक पर लेखक का नाम नहीं था...

भाग-2

⏳⏳⏳-3

@Thread Reader App Unroll

Badal Saraswat

@badal_saraswat

झूठी शान के परिंदे ही ज्यादा फड़फड़ाते हैं बाज़ की उडान में आवाज़ नहीं होती तजुर्बों ने सिखाया है शेरो को शिकार करना यूं बेवजह दहाड़ मारकर शिकार किया नहीं जाता..

Follow on Twitter